चौखट वो तोरण द्वार की | By Vikas Bagri

कृष्णा कृष्णा..
जबसे बनाया तूने मुझे अपना

चलने लगी है रोज़ी रोटी खूब मेरे परिवार की
जबसे पार करी मैंने वो चौखट तोरणद्वार की

सोचो क्या नहीं दे सकता जो शीश दे गया दान में
दोनों लोक भी दे डाले थे बस दो मुट्ठी दान में
लाज ये रखता सबकी जैसे राखी सुदामा यार की
जबसे पार करी मैंने वो चौखट तोरणद्वार की

इनके भरोसे छोड़ दे सब फिर इनकी ज़िम्मेदारी है
ढूंढें से भी नहीं मिलेगी विपदाएं जो सारी हैं
श्याम से जिनकी यारी है क्यूँ फिकर करे बेकार की
जबसे पार करी मैंने वो चौखट तोरणद्वार की

हाथ पकड़ता है ये उनका जो दुनिया से हारे हैं
कितने ही प्रेमी बाबा ने भव से पार उतारे हैं
किस्मत से मिलती है सेवा सोनी इस दरबार की
जबसे पार करी मैंने वो चौखट तोरणद्वार की

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%9a%e0%a5%8c%e0%a4%96%e0%a4%9f-%e0%a4%b5%e0%a5%8b-%e0%a4%a4%e0%a5%8b%e0%a4%b0%e0%a4%a3-%e0%a4%a6%e0%a5%8d%e0%a4%b5%e0%a4%be%e0%a4%b0-%e0%a4%95%e0%a5%80-by-vikas-bagri/